स्थूल शरीर एवं सूक्ष्म शरीर

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

स्थूल शरीर हाड़–मांस का बना हुआ दिखलाई देने वाला पंचभूतात्मक शरीर है। इसमें पांच ज्ञानेन्द्रिया, पांच कर्मेन्द्रियां मन और बुद्धि है। स्थूल शरीर दिखलाई देता है। सूक्ष्म शरीर दिखलाई नहीं देता। सूक्ष्म शरीर अन्तः विराजमान आत्मा है। सूक्ष्म शरीर के कारण स्थूल शरीर कार्य करता है। यदि जीव इस शरीर से निकल जाये तो पंच भौतिक तत्त्वों से बना शरीर पंचभूतों में मिल जाता है। इसमें कुछ शेष नहीं बचता। केवल आत्मा ही एक ऐसा तत्त्व है जो शेष रहता है। शरीर नश्वर है। आत्मा अजर, अमर, अविनाशी और सच्चिदानन्द स्वरूप है। सभी प्रकार की प्रवृत्तियाँ आत्मा में स्पन्दन पैदा करती हैं, जो कि कर्म वर्गणा को आकर्षित करती हैं, इसको चैतसिक भौतिक बल कहा जाता है। अतः कर्म ''चैतसि भौतिक बल'' है।यह कार्मिक दबाव हमारे शरीर और मस्तिष्क को शान्ति की शक्ति प्रदान करता है, उससे शारीरिक एवं मानसिक क्रियाएं निष्पादित होती हैं। इससे अन्तःस्रावी ग्रंथियों के स्रावों में घट बढ़ होती है।

अन्तःस्रावी ग्रंथियों के स्रावों और जीनों से कर्म परमाणु सूक्ष्म होते हैं। मुख्य प्रश्न यह है कि कर्म का स्वरूप क्या है और कर्म आत्मा के साथ कैसे बंधता है? जब तक आत्मा कार्मण शरीर के साथ रहती है, तभी तक उसका बन्धन है। रागद्वेष के कारण कषाय उत्पन्न होता है। कषाय के कारण प्रेम और घृणा, आसक्ति और अनासक्ति उत्पन्न होती है। क्रोध, मान माया और लोभ–चार मुख्य कषाय हैं। मन्दता और तीव्रता के आधार पर इनका और भी वर्गीकरण हो सकता है। इन्हीं के कारण ही आत्मा में विकार उत्पन्न होता है। शुद्ध आत्मा में अनन्त दर्शन और अनन्त ज्ञान समाहित रहता है। किन्तु कर्म कषायों से बद्ध आत्मा में सीमित ज्ञान, दर्शन और सुख रहता है। शुद्ध आत्मा की शक्ति कर्म के द्वारा रोक दी जाती है। कर्म अज्ञान से उत्पन्न होता है।

कर्म वर्गणाएँ जिनका सम्बन्ध आत्मा से होता है, वे कर्म शरीर का अंश हो जाती हैं और कर्म कहलाती है। कर्म विशिष्ट वर्गणाओं का समूह कहलाता है। यह चतुःस्पर्शी होता है, यह विशेष प्रकार के कर्म प्रभाव से युक्त रहता है। इसी से ही कार्मण शरीर का निर्माण होता है। कर्म शरीर के साथ कर्म का संयोग कितने समय तक रहता है? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। प्रत्येक कर्म का अपना जीवनकाल है। फलदान के पश्चात् वह कर्म शरीर से पृथक हो जाता है। कर्म शरीर से कर्म के पृथक होने को कर्म निर्जरा कहते हैं।

जीन और कर्म श्रीर का सम्बन्ध अनादि प्रवाहवाला है। ये सम्बन्ध तब तक नहीं टूटते जब तक वे एक–दूसरे को प्रभावित करते रहते हैं। यह जीव के विकारी परिवर्तन का आन्तरिक कारण है। कार्मण शरीर की संरचना में कार्मण वर्गणाएँ बहुत सूक्ष्म होती हैं।

वर्गणा का अर्थ है– एक जाति के पुद्गल स्कन्धों का समूह। प्रत्येक प्रवृत्ति आत्मा में प्रकम्पन पैदा करती है। इस प्रकम्पन से कार्मण वर्गणाएँ संगठित हो आत्मा के साथ चिपक जाती हैं। संसार दशा में आत्मा को हर समय अनन्त–अनन्त कर्मवर्गणाएँ आवेष्टित किये रहती हैं। नयी कर्म वर्गणाएँ पहले ही कर्म वर्गणाओं से रासायनिक क्रिया–प्रतिक्रिया करके एकमेक हो जाती हैं। सभी कर्म–वर्गणाओं में एक समान योग्यता नहीं रहती।अतः सभी का कार्मण शरीर के साथ बन्धन भी भिन्न–भिन्न होता है। आत्मा के साथ बंधने के बाद जो उनमें नयी शक्ति या नयी बनावट मिलती हे, उसका परिपाक होने पर वे फल देने या प्रभाव डालने में समर्थ होती हैं।

आत्मा और कर्म का सम्बन्ध अनादि है। संसारी आत्मा सदैव अशुद्ध अवस्था में रहता है, जैसे स्वर्ण खदान में धूल मिश्रित रूप में रहता है। स्वर्ण जब तक शुद्धीकरण प्रक्रिया से नहीं गुजरता तब तक शुद्ध रूप में नहीं हो सकता, उसी प्रकार आत्मा भी उचित शुद्धीकरण प्रक्रिया के बिना शुद्धरूप में स्थित नहीं हो सकती। आत्मा के शुद्ध होने के पश्चात् ही उसमें पूर्ण दर्शन, पूर्ण ज्ञान और पूर्ण चारित्र प्राप्त होता है। यह आत्मा की शुद्धावस्था है। शुद्धावस्था में ही आत्मा में पूर्णता प्रतिष्ठित होती है। अपूर्ण अवस्था, जिसे आत्मा का संसारी अवस्था कहते हैं, में जन्म और मृत्यु का क्रम चलता रहता है। अशुद्धता ही कर्म है। आत्मा और कर्म में निरन्तर क्रिया–प्रतिक्रिया होती रहती है। इसके परिणामस्वरूप बहुत से जीव इन चार योनियों में अन्तहीन यात्रा करते रहते है– देव, मनुष्य, नारकी और तिर्यंच। कर्म शरीर कर्मांशों से

निर्मित है। कर्मांश पुद्गल हैं और पुद्गल अजीव है। आत्मा की तरह पुद्गल भी षड् द्रव्यों में से एक द्रव्य है। कार्मण शरीर अत्यन्त सूक्ष्म है। सूक्ष्मदर्शी यंत्रों अथवा किसी अन्य सूक्ष्मदर्शी यंत्रों से भी इसको नहीं देखा जा सकता। निश्चित रूप से कर्म शरीर के परमाणु सबसे अधिक सूक्ष्म हैं।

जड़ और चेतन के सम्बन्ध पर सांसारिक अस्तित्व निर्भर है। स्थूल शरीर से भिन्न एक सूक्ष्म शरीर भी है जो कि जड़ और चेतन के बीच सम्बन्ध का कार्य करता है। जैन दर्शन के अनुसार आत्मा में हर क्षण बिना उसका घनत्व घटे परिवर्तन होता रहता है। आत्मा में अनेक शक्तियां हैं और हर क्षण आत्मा का अस्तित्व इन शक्तियों के संयुक्त होने पर निर्भर करता है।